पाठ 6

बिहारी के दोहे

(प्रस्तुत पाठ में नीति एवं भक्ति के दोहों के माध्यम से कवि ने नैतिक एवं व्यावहारिक जीवन-मूल्यों को स्पष्ट किया है।)

नीति

बड़े न हूजै गुनन बिन, विरद-बड़ाई पाय।

कहत धतूरे सों कनक, गहनों गढ़य़ौ न जाय।।

अति अगाध, अति ओथरो, नदी, कूप, सर बाइ।

सो ताकौ सागर जहाँ, जाकी प्यास बुझाइ।।

ओछे बड़े न ह्वै सकैं, लगांै सतर ह्वै गैन।

दीरघ होहिं न नैकहूँ, फारि निहारै नैन।।

कनक कनक तै सौगुनी, मादकता अधिकाय।

उहि खाये बौराय जग, इहिं पाये बौराय।।

दिन दस आदरु पाइकै, करि लै आपु बखानु।

जौ लगि काग! सराध पखु, तौ लगि तौ सनमानु।।

भक्ति

बन्धु भये का दीन कै, को तार्यौ रघुराइ।
तूठे तूठे फिरत हौ, झूठै विरद कहाइ।।

मोहन मूरति स्याम की, अति अद्भुत गति जोइ।
बसतु सुचित-अन्तर तऊ, प्रतिबिम्बितु जग होइ।।

भजन कह्यौ, ताते भज्यौ, भज्यौ न एकौ बार।
दूरि भजन जातैं कह्यौ, सौ तैं भज्यौ गँवार ।।
-बिहारी

बिहारी का जन्म ग्वालियर के पास वसुआ, गोविन्दपुर ग्राम में सन् 1595 ई0 कों हुआ था। ये जयपुर नरेश के दरबारी कवि थे। कहा जाता है कि महाराजा जयसिंह इनके प्रत्येक दोहे पर एक सोने की मुद्रा भेंट करते थे। इनका एकमात्र काव्य-संग्रह 'बिहारी सतसई' है, जो शृंगार प्रधान है। इनका निधन सन् 1663 ई0 को हुआ था।

शब्दार्थ

विरद = यश। ओथरो = उथला। बाइ = बापी, बावली। सतर ह्वै = ऐंठकर। गैन = गगन, आकाश। लगौं = छूने लगे। नैकहूँ = थोड़ा सा। कनक = सोना, धतूरा। सराध पखु =

श्राद्ध पक्ष (क्वार मास के आरम्भिक पन्द्रह दिन)। तूठे = प्रसन्न होकर। भजन कह्यौ = जिसका गुणगान (भजन) करने के लिए कहा। ताते भज्यौ = उससे दूर भाग गये। भज्यौ न = भजन नहीं किया। दूरि भजन जातैं = जिन दुर्गुणों से दूर भागने (रहने) के लिए। सो तैं भज्यौ गँवार= ऐ मूर्ख तूने उसी का भजन किया अर्थात् उन्हीं दुर्गुणों को अपनाया।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

रहीम के अतिरिक्त कबीर और तुलसीदास जैसे अन्य भक्तिकालीन कवियों ने भी नीतिपरक दोहों की रचना की है। नीति से सम्बन्धित इनके दो-दो दोहों को पुस्तकालय की सहायता से लिखिए।

विचार और कल्पना

1. 'धतूरे' की अपेक्षा 'सोने' को अधिक मादक क्यों कहा गया है ?

2. नीति के दोहों में कोई न कोई मूल्य छिपा होता है, जैसे-पहले दोहे में 'व्यक्ति अपने गुणों से बड़ा होता है' से सम्बन्धित मूल्य है। इसी प्रकार निम्नलिखित मूल्यों से सम्बन्धित दोहों को ढँूढ़कर लिखिए -

(क) दिखावा करने से बड़प्पन नहीं आता।
(ख) स्वयं अपनी प्रशंसा नहीं करनी चाहिए।
(ग) जिस वस्तु से हमारा कार्य सिद्ध हो, वही महत्त्वपूर्ण है।
(घ) गुण, सौन्दर्य से अधिक महत्त्वपूर्ण है।

कविता से

1. 'नाम बड़ा होने से ही कोई बड़ा नहीं हो जाता' इस कथन की पुष्टि के लिए कवि ने कौन- सा उदाहरण दिया है?

2. कवि ने नदी, कूप, सर, बावली को किस स्थिति में सागर के समान माना है?

3. 'छोटे बड़े नहीं हो सकते' इसके लिए कौन-सा उदाहरण दिया गया है ?

4. कृष्ण की मोहन मूरति क्यों अद्भुत है ?

5. पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) सो ताकौ सागर जहाँ, जाकी प्यास बुझाइ।

(ख) दूरि भजन जातैं कह्यौ, सौ तैं भज्यौ गँवार।

(ग) तूठे तूठे फिरत हौ, झूठै विरद कहाइ।

भाषा की बात

1. कविता में प्रयुक्त निम्नलिखित शब्दों को देखिए और उनके खड़ी बोली के रूप पर ध्यान दीजिए। सो = वह, ताकौ = उसके लिए, ह्वै सकैं = हो सके। नीचे लिखे शब्दों के खड़ी बोली रूप लिखिए -

तऊ, ताते, जातैं, कह्यौ।

2. 'कनक कनक तै सौगुनी, मादकता अधिकाय' में 'कनक' शब्द दो बार आया है। पहले 'कनक' शब्द का अर्थ धतूरा है तथा दूसरे 'कनक' शब्द का अर्थ स्वर्ण है। कविता में जहाँ एक ही शब्द दो या दो से अधिक बार आये और उसका अर्थ भिन्न- भिन्न हो, वहाँ यमक अलंकार होता है।

नीचे लिखी पंक्तियों में अलंकार स्पष्ट कीजिए-

(क) भजन कह्यौ, ताते भज्यौ, भज्यौ न एकौ बार।

दूरि भजन जातैं कह्यौ, सौ तैं भज्यौ गँवार ।।

(ख) 'इस धरा का इस धरा पर ही धरा रह जायेगा।'

(ग) 'काली घटा का घमण्ड घटा।'

इसे भी जानें

संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार संघ की राजभाषा हिन्दी तथा लिपि देवनागरी है।